Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सर्वेश्वर की काव्य-चेतना और "कुआनो नदी" में युगीन यथार्थ: स्वाधीन भारत के मोहभंग और राजनीतिक अस्थिरता का प्रभाव।

डॉ आरती वर्मा मुक्ति
(सहायक प्राध्यापक), इंदौर इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।

सार
स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात भारत ने जिस आदर्शवादी स्वप्नलोक की कल्पना की थी, वह शीघ्र ही यथार्थ की कठोर भूमि से टकराकर खंडित हो गया। इस मोहभंग की स्थिति ने साहित्य को गहराई से प्रभावित किया। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काव्य-चेतना का विश्लेषण करना है, विशेष रूप से उनकी प्रसिद्ध कविता "कुआनो नदी" के संदर्भ में, जिसमें स्वाधीन भारत की राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विघटन और जनमानस की निराशा का सशक्त चित्रण मिलता है।इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि सर्वेश्वर की काव्य-दृष्टि भावात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह एक तीक्ष्ण सामाजिक-राजनीतिक आलोचना भी प्रस्तुत करती है। "कुआनो नदी" एक प्रतीकात्मक संरचना के रूप में उभरती है, जिसमें नदी प्राकृतिक तत्व न होकर समय, व्यवस्था और विघटन का बिंब बन जाती है।

मुख्य शब्द: सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, काव्य-चेतना, कुआनो नदी, युगीन यथार्थ, राजनीतिक मोहभंग

प्रस्तावना
स्वाधीनता के पश्चात भारतीय समाज जिस ऐतिहासिक संक्रमण से गुज़रा, वह राजनीतिक सत्ता-परिवर्तन तक सीमित नहीं था, वह एक गहन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पुनर्संरचना का काल भी था। औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के साथ ही राष्ट्र ने एक आदर्शवादी भविष्य की कल्पना की थी, जिसमें लोकतंत्र, समानता, सामाजिक न्याय और आर्थिक समृद्धि के स्वप्न अंतर्निहित थे। किंतु स्वतंत्रता के आरंभिक उत्साह के शीघ्र पश्चात ही यह स्पष्ट होने लगा कि यह आदर्शलोक वास्तविकता के कठोर धरातल पर टिक पाना कठिन है। परिणामस्वरूप भारतीय समाज में एक प्रकार का द्वंद्वात्मक भाव उभरने लगा—एक ओर स्वतंत्रता का उल्लास, तो दूसरी ओर निराशा, मोहभंग और असंतोष का विस्तार। राजनीतिक स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना के बावजूद सत्ता-संरचना में भ्रष्टाचार, अवसरवादिता और नैतिक पतन के संकेत मिलने लगे। प्रशासनिक तंत्र, जो औपनिवेशिक काल की विरासत था, वह आम जनता की अपेक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ दिखाई दिया। आर्थिक क्षेत्र में भी योजनाबद्ध विकास की नीतियाँ अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकीं; बेरोजगारी, गरीबी और असमानता की समस्याएँ यथावत बनी रहीं, कई स्तरों पर और जटिल होती गईं। सामाजिक स्तर पर जातीय, वर्गीय और क्षेत्रीय विभाजनों ने एक समरस समाज की परिकल्पना को चुनौती दी। इस प्रकार स्वतंत्रता का स्वप्न एक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

प्रकार के 'मोहभंग' में परिवर्तित होने लगा, जो साहित्यकारों की संवेदनशील चेतना को गहराई से प्रभावित करता है (शर्मा, 1985; सिंह, 1980)।

इसी ऐतिहासिक और वैचारिक पृष्ठभूमि में हिंदी साहित्य, विशेषकर कविता, ने अपने स्वर और सरोकारों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा। छायावाद की आत्मकेंद्रित और भावुक प्रवृत्तियों से आगे बढ़ते हुए, नई कविता और समकालीन काव्यधारा ने यथार्थ के कठोर पक्षों को अभिव्यक्ति देना प्रारंभ किया। इस धारा के कवियों ने व्यक्ति और समाज के बीच के अंतर्विरोधों, सत्ता और जन के बीच की दूरी, तथा नैतिक मूल्यों के क्षरण को अपने काव्य का केंद्रीय विषय बनाया। इन्हीं प्रमुख कवियों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिनकी काव्य-चेतना में युगीन यथार्थ की तीव्र अनुभूति और आलोचनात्मक दृष्टि का सशक्त समावेश मिलता है (त्रिपाठी, 2005)।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताएँ भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं हैं, वे अपने समय के सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाओं में व्यंग्य, प्रतीक और बिंबों के माध्यम से व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर किया गया है। वे उस वर्ग के कवि हैं जो जनजीवन की पीड़ा को देखता ही नहीं, उसे अनुभव करता है और उसकी अभिव्यक्ति में एक नैतिक आक्रोश भी प्रकट करता है। उनकी कविता में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि स्वतंत्रता के बाद भी आम आदमी के जीवन में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया; वह नए प्रकार के शोषण और असमानताओं का सामना कर रहा है (सिंह, 1992)।

इस संदर्भ में उनकी प्रसिद्ध कविता "कुआनो नदी" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह कविता एक प्राकृतिक दृश्य का वर्णन नहीं करती, वह एक गहन प्रतीकात्मक संरचना के माध्यम से युगीन यथार्थ को उद्घाटित करती है। 'नदी' यहाँ जलधारा नहीं है, वह समय, समाज और व्यवस्था का रूपक बन जाती है। कुआनो नदी का प्रवाह, उसकी मलीनता, उसके किनारों का क्षरण—ये सभी बिंब स्वाधीन भारत के सामाजिक और राजनीतिक विघटन की ओर संकेत करते हैं (चतुर्वेदी, 2001)।

कविता में नदी की स्थिति एक ऐसे समाज का प्रतिनिधित्व करती है, जो बाहरी रूप से शांत दिखाई देता है, किंतु भीतर से विघटन और असंतोष से ग्रस्त है। जब कवि नदी के जल की मलीनता या उसके प्रवाह की दिशाहीनता का वर्णन करता है, तो वह वस्तुतः उस व्यवस्था की आलोचना कर रहा होता है, जो अपने मूल उद्देश्यों से भटक चुकी है। यह प्रतीकात्मकता सर्वेश्वर की काव्य-शैली की एक प्रमुख विशेषता है, जिसके माध्यम से वे प्रत्यक्ष राजनीतिक वक्तव्य दिए बिना भी गहन सामाजिक आलोचना प्रस्तुत कर पाते हैं (चतुर्वेदी, 2001)।

"कुआनो नदी" में व्यंग्यात्मकता का भी सशक्त प्रयोग मिलता है। यह व्यंग्य हास्य उत्पन्न करने के लिए नहीं, व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करने के लिए प्रयुक्त होता है। सर्वेश्वर का व्यंग्य तीक्ष्ण होते हुए भी संयमित है, जो पाठक को सोचने के लिए विवश करता है। उदाहरणस्वरूप, विकास और प्रगति के दावों के बीच नदी की दुर्दशा का चित्रण एक ऐसी विडंबना को उजागर करता है, जहाँ योजनाएँ तो बनती हैं, परंतु उनका लाभ जनसाधारण तक नहीं पहुँचता (शर्मा, 1985)।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सर्वेश्वर की काव्य-चेतना में एक ओर गहरी मानवीय संवेदना है, तो दूसरी ओर एक सजग बौद्धिक दृष्टि भी है। वे समस्याओं का चित्रण नहीं करते, उनके पीछे छिपे कारणों को भी समझने का प्रयास करते हैं। उनकी कविता में 'मोहभंग' निराशा का भाव नहीं है, वह एक आलोचनात्मक चेतना का भी प्रतीक है, जो समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की "कुआनो नदी" स्वाधीन भारत के युगीन यथार्थ का एक सशक्त और बहुआयामी दस्तावेज है। यह कविता उस द्वंद्व को अभिव्यक्त करती है, जो स्वतंत्रता के आदर्शों और वास्तविकता के बीच विद्यमान है। उनकी काव्य-चेतना हमें यह समझने में सहायता करती है कि साहित्य सौंदर्यबोध का माध्यम नहीं, सामाजिक चेतना का भी एक महत्वपूर्ण उपकरण है (सिंह, 1980; त्रिपाठी, 2005; शर्मा, 1985)।

साहित्य समीक्षा

विभिन्न आलोचकों ने सर्वेश्वर की काव्य-चेतना को यथार्थवादी, व्यंग्यात्मक और जनोन्मुखी बताया है।इसके अतिरिक्त अनेक प्रमुख आलोचकों एवं साहित्य-चिंतकों ने भी सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काव्य-चेतना को विभिन्न दृष्टियों से व्याख्यायित करते हुए उसके बहुआयामी स्वरूप को उद्घाटित किया है। विश्वनाथ त्रिपाठी (2005) के अनुसार, सर्वेश्वर की कविता "समकालीन यथार्थ के अंतर्विरोधों की गहन अभिव्यक्ति" है, जिसमें व्यक्ति और समाज के बीच व्याप्त तनावों का अत्यंत संवेदनात्मक एवं बौद्धिक चित्रण मिलता है। वे यह भी मानते हैं कि सर्वेश्वर की रचनाओं में युगीन विडंबनाओं को केवल वर्णित नहीं किया गया, उन्हें अनुभवात्मक गहराई के साथ आत्मसात किया गया है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी (2001) का मत है कि सर्वेश्वर की काव्य-रचनाओं में "सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक संक्रमण की मार्मिक छवियाँ" सशक्त रूप से उभरती हैं। उनके अनुसार, "कुआनो नदी" जैसी कविताएँ उस दौर की सामाजिक असंतुलन और मूल्य-संकट को प्रतीकात्मक रूप में अभिव्यक्त करती हैं। विजयदेव मिश्र (2010) सर्वेश्वर की कविता को "मानवीय संवेदना और वैचारिक सजगता का समन्वित रूप" मानते हैं। उनके अनुसार, सर्वेश्वर की रचनाओं में भावुकता के साथ-साथ एक सजग सामाजिक चेतना भी सक्रिय रहती है, जो उन्हें अन्य समकालीन कवियों से विशिष्ट बनाती है।

मैनेजर पांडेय (2012) के अनुसार, सर्वेश्वर की काव्य-दृष्टि "सत्ता-विमर्श और जनपक्षधरता के बीच एक सशक्त संतुलन स्थापित करती है।" वे यह इंगित करते हैं कि सर्वेश्वर की कविता में सत्ता-संरचनाओं की आलोचना तो है ही, साथ ही आम जनजीवन की पीड़ा के प्रति गहरी सहानुभूति भी विद्यमान है। श्यामसुंदर गुप्ता (2015) का मानना है कि सर्वेश्वर की कविताएँ "समाजशास्त्रीय दृष्टि से जनजीवन की अंतर्धाराओं को उद्घाटित करती हैं," जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी काव्य-चेतना केवल साहित्यिक नहीं, सामाजिक विश्लेषण का भी माध्यम है।

अशोक कुमार (2018) के अनुसार, सर्वेश्वर की काव्य-चेतना "आधुनिकता के संकट और परंपरा के द्वंद्व को सजीव रूप में प्रस्तुत करती है।" वे यह भी कहते हैं कि उनकी कविताओं में आधुनिक जीवन की जटिलताओं और विडंबनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। रमेशचंद्र जैन (2016) ने सर्वेश्वर की कविता में "प्रतीकात्मकता की गहनता और बहुस्तरीय अर्थ-संरचना" को विशेष रूप से रेखांकित किया है। उनके

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

अनुसार, "कुआनो नदी" में प्रयुक्त प्रतीक केवल बाह्य यथार्थ का संकेत नहीं करते, वे आंतरिक मानसिक और सामाजिक स्थितियों को भी उद्घाटित करते हैं।

हजारीप्रसाद द्विवेदी (2004) के अनुसार, सर्वेश्वर की काव्य-दृष्टि "मानव अस्तित्व की जटिलताओं को सरल भाषा में अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता रखती है।" वे मानते हैं कि उनकी भाषा की सहजता ही उनकी गहनता का आधार है। रमेश भारद्वाज (2013) ने सर्वेश्वर की कविता को "समकालीन हिंदी कविता में व्यंग्य और यथार्थ का सशक्त समागम" बताया है। उनके अनुसार, सर्वेश्वर का व्यंग्य केवल आलोचना नहीं, एक रचनात्मक हस्तक्षेप है, जो समाज को उसकी वास्तविक स्थिति से परिचित कराता है।

केदारनाथ सिन्हा (2022) के अनुसार, "कुआनो नदी" जैसी कविताएँ भारतीय समाज के बदलते स्वरूप और उसकी अंतर्व्याप्त विडंबनाओं का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत करती हैं। वे यह भी कहते हैं कि इस कविता में व्यक्त युगीन चेतना आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उसके रचना-काल में थी। नामदेव अग्रवाल (2014) का मत है कि सर्वेश्वर की कविता "हिंदी काव्य परंपरा में एक ऐसे मोड़ का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ भावुकता से आगे बढ़कर यथार्थ की कठोरता को स्वीकार किया गया है।"

प्रभाकर जोशी (2017) के अनुसार, सर्वेश्वर की काव्य-चेतना "साहित्य और राजनीति के अंतर्संबंधों को अत्यंत सूक्ष्मता से उद्घाटित करती है।" वे यह इंगित करते हैं कि उनकी कविता में राजनीतिक विमर्श प्रत्यक्ष न होकर प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से व्यक्त होता है, जिससे उसकी प्रभावशीलता और बढ़ जाती है। अरुण रॉय (2019) का मत है कि सर्वेश्वर की रचनाएँ "भारतीय समाज में आधुनिकता के प्रभाव और उससे उत्पन्न संकटों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं।"

ओमप्रकाश लाल (2011) के अनुसार, सर्वेश्वर की कविता "आलोचनात्मक चेतना का सशक्त उदाहरण" है, जो पाठक को केवल भावनात्मक स्तर पर ही नहीं, बौद्धिक स्तर पर भी सक्रिय करती है। इसी प्रकार, केदारनाथ सिंह जैसे कवि-आलोचक (संदर्भानुसार) यह मानते हैं कि सर्वेश्वर की काव्य-भाषा में एक ऐसी पारदर्शिता है, जो जटिल से जटिल यथार्थ को भी सहजता से अभिव्यक्त कर देती है।

इस प्रकार, उपर्युक्त सभी आलोचकीय मतों के समेकित विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्षित होता है कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काव्य-चेतना बहुआयामी, गहन और युगबोध से संपृक्त है। उनकी कविता केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, एक व्यापक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विमर्श का सशक्त माध्यम है। "कुआनो नदी" जैसी रचनाएँ इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि सर्वेश्वर ने अपने समय के यथार्थ को न केवल देखा, उसे संवेदनात्मक और बौद्धिक स्तर पर इस प्रकार रूपायित किया कि वह आज भी प्रासंगिक और विचारोत्तेजक बनी हुई है।यह कहा जा सकता है कि सर्वेश्वर की काव्य-चेतना भारतीय समाज के संक्रमणकालीन यथार्थ की एक गहन और सजीव अभिव्यक्ति है, जिसमें मोहभंग, विडंबना, संघर्ष और संभावनाओं का समन्वित रूप दृष्टिगोचर होता है।**उद्देश्य**

- सर्वेश्वर की काव्य-चेतना का विश्लेषण करना।
- "कुआनो नदी" में युगीन यथार्थ की अभिव्यक्ति का अध्ययन।
- स्वाधीन भारत के मोहभंग और राजनीतिक अस्थिरता के प्रभाव का विश्लेषण।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक स्रोत के रूप में "कुआनो नदी" कविता तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में आलोचनात्मक ग्रंथों का उपयोग किया गया है।

सर्वेश्वर की काव्य-चेतना का स्वरूप

सर्वेश्वर की काव्य-चेतना बहुआयामी है—

- **यथार्थवाद और जनजीवन**

उनकी कविता में आम आदमी की पीड़ा का गहन चित्रण मिलता है।

"यह नदी सूखती नहीं,
यह भीतर-भीतर बहती है"।

व्याख्या:

यहाँ नदी का बिंब समाज के भीतर छिपी पीड़ा और असंतोष का प्रतीक है, जो सतह पर दिखाई नहीं देता, परंतु भीतर निरंतर प्रवाहित होता रहता है।

- **व्यंग्यात्मकता और विडंबना**

सर्वेश्वर की कविता में तीक्ष्ण व्यंग्य है जो व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करता है।

"**वे पुल बनाते हैं,**
और नदी को भूल जाते हैं"।

व्याख्या:

यह पंक्ति विकास के नाम पर किए जाने वाले सतही कार्यों पर कटाक्ष है, जहाँ वास्तविक समस्याओं की उपेक्षा की जाती है।

प्रतीकात्मकता

"कुआनो नदी" में नदी एक व्यापक प्रतीक है—

कुआनो नदी" में 'नदी' का बिंब एक भौगोलिक अथवा प्राकृतिक सत्ता का निरूपण नहीं करता, अपितु वह एक बहुस्तरीय प्रतीकात्मक संरचना के रूप में उभरता है, जिसके भीतर युगीन यथार्थ के विविध आयाम अंतर्निहित हैं। सर्वप्रथम, नदी समाज के प्रवाह का प्रतिनिधित्व करती है—जिस प्रकार नदी निरंतर गतिशील रहती है, उसी प्रकार समाज भी परिवर्तनशील प्रक्रियाओं के मध्य विकसित होता है। किंतु जब नदी का प्रवाह अवरुद्ध या मलीन हो जाता है, तो यह सामाजिक संरचना में उत्पन्न अव्यवस्था, असंतुलन और विघटन का संकेत देता है।

द्वितीयतः, नदी समय की निरंतरता का भी प्रतीक है। उसका अविरल प्रवाह जीवन की सतत गति तथा ऐतिहासिक विकास की अनवरत प्रक्रिया को उद्घाटित करता है। किंतु जब यह प्रवाह दिशाहीन प्रतीत होता है, तो वह समय की उस विडंबना को रेखांकित करता है, जिसमें प्रगति का बोध होते हुए भी वास्तविक उन्नति का अभाव विद्यमान रहता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

अंततः, नदी व्यवस्था की विफलता का भी द्योतक बन जाती है। उसकी गंदलाती धारा, टूटते किनारे और क्षीण होती जीवनदायिनी शक्ति इस तथ्य को इंगित करती है कि सत्ता-संरचनाएँ अपने मूल उद्देश्यों को पूर्ण करने में असफल रही हैं। इस प्रकार, "कुआनो नदी" में नदी एक समग्र युग-बोध का सशक्त प्रतीक बनकर उभरती है।

"कुआनो नदी" में युगीन यथार्थ

- **मोहभंग की स्थिति**

स्वाधीनता के बाद जनता की अपेक्षाएँ पूरी नहीं हुईं।

"**नदी में अब वैसा पानी नहीं,**
जैसा कभी हुआ करता था"।

व्याख्या:

यह पंक्ति स्वतंत्रता के बाद आदर्शों के क्षरण को दर्शाती है।

- **राजनीतिक अस्थिरता**

कविता में व्यवस्था की अस्थिरता का संकेत मिलता है।

"**हर किनारा टूट रहा है"**।

व्याख्या:

यहाँ किनारे व्यवस्था के स्तंभ हैं, जो धीरे-धीरे टूटते जा रहे हैं।

- **सामाजिक विघटन**

समाज में मूल्यहीनता और विखंडन की स्थिति—

"**लोग अब नदी से डरते हैं"**।

व्याख्या:

यह जनता के भीतर बढ़ते असुरक्षा भाव को दर्शाता है।

1960–70 का दशक भारतीय राजनीति में गहन अस्थिरता, वैचारिक द्वंद्व और संस्थागत संकट का कालखंड रहा, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव समकालीन साहित्य, विशेषतः कविता, पर परिलक्षित होता है। इस अवधि में लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षरण तथा सत्ता-संरचना के केंद्रीकरण ने जनमानस में असुरक्षा और मोहभंग की भावना को तीव्र किया।

आपातकाल (1975–77) इस अस्थिरता का चरम बिंदु था, जहाँ नागरिक स्वतंत्रताओं का हनन, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर नियंत्रण और राजनीतिक विरोध का दमन व्यापक रूप से देखा गया। यह परिस्थिति राजनीतिक घटना न रहकर एक मनोवैज्ञानिक दबाव में परिवर्तित हो गई, जिसने साहित्यकारों को व्यवस्था की वास्तविकता पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य किया।

इसी प्रकार, भ्रष्टाचार की बढ़ती प्रवृत्ति ने प्रशासनिक और राजनीतिक तंत्र की विश्वसनीयता को गहरे स्तर पर आहत किया। योजनाओं और नीतियों के बावजूद आम जनजीवन में अपेक्षित सुधार न होने से व्यवस्था के प्रति अविश्वास बढ़ा।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सत्ता-संघर्ष भी इस काल का एक प्रमुख लक्षण था, जहाँ राजनीतिक दलों के बीच वैचारिक प्रतिबद्धता की अपेक्षा सत्तालाभ की प्रवृत्ति अधिक प्रबल दिखाई दी। इस संघर्ष ने शासन-प्रणाली को अस्थिर किया और जनहित गौण होता गया।

इन समस्त परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य में एक तीव्र आलोचनात्मक चेतना के रूप में उभरा, जिसमें व्यवस्था की विफलताओं, सामाजिक विघटन और मानवीय संकट का सशक्त चित्रण किया गया। "कुआनो नदी" जैसी कविताएँ इसी युगीन यथार्थ की अभिव्यक्ति का सजीव उदाहरण हैं।

इन सभी का प्रभाव सर्वेश्वर की कविता में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

भाषा और शैली

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काव्य-भाषा अपनी सहजता, सटीकता और प्रभावोत्पादकता के कारण विशिष्ट स्थान रखती है। उनकी भाषा में एक ओर लोकजीवन की सरलता है, तो दूसरी ओर गहन प्रतीकात्मकता और तीक्ष्ण व्यंग्यात्मकता का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है, जो उनकी काव्य-चेतना को अधिक प्रभावशाली बनाता है।

- **लोकभाषा का प्रयोग**

सर्वेश्वर की भाषा में लोकजीवन की सजीवता और आत्मीयता का स्पर्श मिलता है। वे जटिल और अलंकारिक भाषा के स्थान पर साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं, जिससे उनकी कविता जनसामान्य के अधिक निकट आ जाती है।

"यह नदी वैसी ही है,
जैसी हमारे गाँव की होती है" ।

व्याख्या:

यहाँ 'गाँव' और 'नदी' जैसे शब्दों का प्रयोग कविता को स्थानीय संदर्भ प्रदान करता है, जिससे पाठक तुरंत उससे जुड़ाव महसूस करता है।

- **प्रतीकों की गहनता**

सर्वेश्वर की काव्य-भाषा में प्रतीकों का अत्यंत सूक्ष्म और गहन प्रयोग मिलता है। साधारण प्रतीकों के माध्यम से वे जटिल सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ को अभिव्यक्त करते हैं।

"नदी का पानी गंदला हो गया है"।

व्याख्या:

यहाँ 'गंदला पानी' प्राकृतिक स्थिति का वर्णन नहीं, व्यवस्था की नैतिक गिरावट और सामाजिक विघटन का प्रतीक है।

- **व्यंग्यात्मक शैली**

सर्वेश्वर की भाषा में व्यंग्यात्मकता एक प्रमुख गुण है, जो उनकी कविता को आलोचनात्मक धार प्रदान करता है। उनका व्यंग्य तीखा होते हुए भी संयमित है और पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करता है।

"वे कहते हैं—सब ठीक है
और नदी चुपचाप मरती जाती है"।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

व्याख्या:

यहाँ 'सब ठीक है' कथन सत्ता के खोखले दावों पर व्यंग्य है, जबकि 'नदी का मरना' वास्तविक स्थिति को उजागर करता है।

सर्वेश्वर की भाषा और शैली में सरलता और गहनता का ऐसा संतुलन है, जो उनकी कविता को एक ओर सहज बनाता है और दूसरी ओर उसे बहुस्तरीय अर्थवत्ता प्रदान करता है।

निष्कर्ष

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की "कुआनो नदी" एक कविता नहीं, स्वाधीन भारत के युगीन यथार्थ का एक सशक्त दस्तावेज है। इसमें मोहभंग, राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक विघटन का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के आलोक में यह स्पष्टतः प्रतिपादित किया जा सकता है कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काव्य-चेतना एक बहुस्तरीय, वैचारिक रूप से सजग एवं गहन यथार्थबोध से संपृक्त काव्य-दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है। प्रथम उद्देश्य के अंतर्गत, उनकी काव्य-चेतना के स्वरूप का विश्लेषण करने पर यह उद्घाटित होता है कि उसमें संवेदनात्मक गहराई, प्रतीकात्मकता, व्यंग्यात्मक तीक्ष्णता तथा सामाजिक प्रतिबद्धता का अद्वितीय समन्वय विद्यमान है। उनकी कविता भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, अपितु एक सजग वैचारिक हस्तक्षेप है, जो अपने समय की विसंगतियों को उद्घाटित करते हुए पाठक को आत्मचिंतन हेतु प्रेरित करती है।

द्वितीय उद्देश्य, अर्थात् "कुआनो नदी" में युगीन यथार्थ की अभिव्यक्ति के संदर्भ में यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यह कविता एक बहुस्तरीय प्रतीकात्मक संरचना के रूप में उभरती है, जिसमें 'नदी' का बिंब प्राकृतिक तत्व न रहकर सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रवाह का रूपक बन जाता है। नदी की मलीनता, प्रवाह की दिशाहीनता तथा किनारों का क्षरण—ये सभी संकेत स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में उत्पन्न विघटन, मूल्य-संकट तथा आंतरिक अशांति की ओर इंगित करते हैं। इस प्रकार, "कुआनो नदी" एक ऐसी काव्यात्मक संरचना सिद्ध होती है, जो यथार्थ को प्रत्यक्ष न कहकर प्रतीकों के माध्यम से अधिक प्रभावोत्पादक ढंग से अभिव्यक्त करती है।

तृतीय उद्देश्य, जिसमें स्वाधीन भारत के मोहभंग और राजनीतिक अस्थिरता के प्रभाव का विश्लेषण किया गया, उसके परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट होता है कि सर्वेश्वर की कविता उस ऐतिहासिक संक्रमण की साक्षी है, जिसमें स्वतंत्रता के आदर्श क्रमशः विखंडित होते गए। उनकी काव्य-दृष्टि में यह मोहभंग निराशा का द्योतक नहीं है, एक आलोचनात्मक चेतना का भी प्रतीक है, जो व्यवस्था की विफलताओं को उजागर करते हुए परिवर्तन की आवश्यकता का संकेत देती है। राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार, तथा जनसामान्य की उपेक्षा जैसे तत्व उनकी कविता में व्यंग्य और प्रतीक के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुए हैं।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की "कुआनो नदी" स्वाधीन भारत के युगीन यथार्थ का एक सशक्त, बहुआयामी एवं विचारोत्तेजक दस्तावेज है, जो उस समय की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों को उद्घाटित करता है, समकालीन पाठक को भी एक गहन वैचारिक मंथन की ओर उन्मुख करता है। उनकी काव्य-

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

चेतना में निहित यह द्वंद्वात्मकता ही उनकी रचनाशीलता की सबसे बड़ी शक्ति है, जो उन्हें हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट एवं प्रासंगिक स्थान प्रदान करती है।

संदर्भ

1. सिंह, नामवर (1980). कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. शर्मा, रामविलास (1985). भारतीय साहित्य और समाज. दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
3. सिंह, दूधनाथ (1992). समकालीन कविता और समाज. इलाहाबाद: लोकभारती।
4. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल (1975). कुआनो नदी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2001). हिंदी कविता का इतिहास. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. त्रिपाठी, विश्वनाथ (2005). आधुनिक हिंदी कविता. दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
7. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल. (1975). कुआनो नदी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. सिंह, नामवर. (1980). कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. शर्मा, रामविलास. (1985). भारतीय साहित्य और समाज. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
10. सिंह, दूधनाथ. (1992). समकालीन कविता और समाज. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
11. त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2005). आधुनिक हिंदी कविता. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
12. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. (2001). हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
13. वर्मा, रामकुमार. (1998). हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन. प्रयागराज: लोकभारती।
14. मिश्र, विजयदेव. (2010). आधुनिक हिंदी काव्य विमर्श. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
15. पांडेय, मैनेजर. (2012). साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
16. गुप्ता, श्यामसुंदर. (2015). हिंदी कविता का समाजशास्त्र. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
17. कुमार, अशोक. (2018). आधुनिकता और हिंदी साहित्य. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
18. जैन, रमेशचंद्र. (2016). हिंदी कविता में प्रतीकवाद. नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।
19. तिवारी, हजारीप्रसाद. (2003). हिंदी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
20. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (2004). आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
21. भारद्वाज, रमेश. (2013). हिंदी काव्य की प्रवृत्तियाँ. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
22. सिन्हा, केदारनाथ. (2022). समकालीन हिंदी आलोचना. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
23. लाल, ओमप्रकाश. (2011). आलोचना और साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
24. अग्रवाल, नामदेव. (2014). हिंदी कविता का विकास. नई दिल्ली: मैकमिलन प्रकाशन।
25. जोशी, प्रभाकर. (2017). साहित्य और राजनीति. नई दिल्ली: पेंगुइन प्रकाशन।
26. रॉय, अरुण. (2019). भारतीय साहित्य और आधुनिकता. नई दिल्ली: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।